पंचम अध्याय

गोपाल चतुर्वेदी की व्यंग्य शैली: एक आलोचनात्मक अध्ययन

5.1 शैली:

'शैली' शब्द से अभिप्राय किसी काम को करने के तरीके या ढ़ंग से है। हिंदी शब्दकोश के अनुसार शैली का अर्थ है - ''कार्य करने की रीति या पद्धति कला साहित्य आदि की रचना, अभिव्यक्ति की रीति, अभिव्यक्ति का कौशल।''[1] इस प्रकार शैली से किसी व्यक्ति, रचनाकार आदि के कार्य करने के ढ़ंग का पता चलता है।

संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर के अनुसार शैली से अभिप्राय - ''चाल, ढब, ढंग, प्रणाली, रचना का प्रकार।''[2]

हिंदी साहित्य कोश के अनुसार -''शैली, शब्द अंग्रेजी के 'स्टाइल' का अनुवाद है और अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से हिंदी में आया है... प्रसिद्ध यूनानी विचारक अफलातून या प्लेटो का यही मत है 'जब विचार को तात्विक रूपाकार दिया जाता है तो शैली का रूप होता है। प्रसिद्ध फ्रांसीसी उपन्यासकार स्तान्धाल ने भी शैली को अच्छी रचना का गुण मानते हुए विवेचन किया है। उसके विचार में शैली का अस्तित्व इसमें निहित है कि दिए हुए विचार के साथ उन सब परिस्थितियों को जोड़ दिया जाए जो कि उस विचार के अभिमत प्रभाव को संपूर्णता में उत्पन्न करने वाली है। इससे मिलता जुलता ही बर्नार्ड शाह का यह विचार है कि ''प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति ही शैली का अथ और इति है। हमारी समझ में शैली अनुभूत विषय वस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम है जो उस विषय वस्तु की अभिव्यक्ति को सुंदर एवं प्रभावपूर्ण बनाते हैं।''[3]

अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाना ही व्यंग्यकार का कार्य है। अतः वह भाषा के किसी एक रूप में अपना मंतव्य प्रकट करने के लिए विचारों को प्रत्यक्ष रूप प्रदान करता है, उसे शैली कहते हैं। शैली में व्यंग्यकार के व्यक्तित्व की छाप रहती है। व्यंग्य विधा में शैली का वह स्थान है जो मनुष्य में उसके स्वरूप, वेशभूषा तथा सौंदर्य का होता है। शैली भाषा में भावाभिव्यक्ति का प्रमुख तत्त्व है। साहित्य में अन्य विधा की भाषा शैली से व्यंग्य विधा की भाषा शैली में पैनापन अधिक है। कुल मिलाकर व्यंग्य विधा की भाषा शैली कहीं भी छद्मी तथा बनावटी नहीं है। उसके प्रत्येक शब्द तथा वाक्य भी प्रहारी, चुस्त, सशक्त, सटीक, सार्थक और परिपूर्ण दिखाई देते हैं।

गोपाल चतुर्वेदी ने अपने व्यंग्य लेखन में विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है। इन्होंने व्यंग्य की सम्प्रेषणीयता के लिए सभी प्रचलित साहित्यिक विधाओं को अपनाते हुए वस्तु विन्यास में गति या विकास लाने के लिए भिन्न-भिन्न शैलियों का उपयोग किया है। शैली वैविध्य के कारण गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य अनूठापन और ताज़गी लिए हुए होते हैं। इन्होंने अपने व्यंग्य लेखन में वर्णनात्मक, विवरणात्मक, आलोचनात्मक, पत्रात्मक, साक्षात्कार शैली, स्वप्न शैली, मिथकीय, पैरोडी, इंटरव्यू, पुराण, रेखाचित्र आदि लेखन शैलियों का प्रयोग किया है।

5.1.1 वर्णनात्मक शैली :

इस शैली में सहज तथा सरल भाषा का उपयोग किया जाता है और व्यंग्यकार विभिन्न पात्रों, वस्तुओं, दृश्यों तथा पदार्थों का चित्रण तटस्थ होकर करता है। वह किसी के प्रति प्रतिबद्ध नहीं होता है, विसंगत स्थिति की वास्तविकता का चित्रण करना ही उसका लक्ष्य होता है। सारी विसंगतियों का तटस्थ वर्णन करते हुए व्यंग्यकार बीच-बीच में अपने विचार, अपनी समीक्षाएँ एवं मान्यताएँ भी प्रकट करता चलता है।

'हम वकील क्यों न हुए' व्यंग्य निबंध में गोपाल चतुर्वेदी की वर्णनात्मक शैली का एक उदाहरण इस प्रकार है -''यह उन दिनों की बात है जब देश तो स्वतंत्र हो गया था, पर पिता जैसे बुजुर्गों से नई पौध आजाद नहीं हुई थी। हमारे परिवार पर बाबू-मानसिकता इस कदर हावी थी कि बालक या पुरुष होने का पर्याय 'बाबू' कहलाता था। पिता जी को दादी 'बाबू' कहती थीं और हमें 'छोटे बाबू'! हमसे छोटे भाई 'बबुआ' थे। हमें यकीन है कि राधेश्याम जी अपने घर में 'वकील बाबू' रहे होंगे और उनके पुत्र मझले और छोटे वकील बाबू। तकदीर भी अपने आड़े आ गई। हमने पहले ही प्रयास में एम.ए. पास कर लिया। वरना पढ़ाई के दायरे में हमारे प्रयाग विश्वविद्यालय में लखनऊ के तकल्लुफ का दस्तूर था। कुछ लोग मुस्तकिल विश्वविद्यालय में जमें रहते। दो-तीन एम.ए. एकाध किसी विदेशी भाषा का डिप्लोमा, एक अदद ला करते-करते माह दस साल पलक झपकते निकल जाते। भाग्यशाली यूनियन के नेता बन चंद हड़ताले, यूनियन का फड़ और मौके-बेमौके उगाहा हुआ चंदा निगल डकार भी न लेते। कुछ प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग्य आजमाते।"[4]

एक अन्य स्थान पर उद्घाटन का दिन व्यंग्य निबंध में भी वर्णनात्मक शैली का एक अच्छा उदाहरण देखिए -''युद्ध-स्तर पर तैयारियाँ हो रही थीं। शामियाना लग चुका था। स्थानीय रेल मंडल अधीक्षक सक्सेना को महाप्रबंधक श्री बनर्जी का विशेष निर्देश था कि समारोह शानादार होना चाहिए और सुरूचिपूर्ण भी। मंत्री जी पहली बार इस क्षेत्रीय रेल के किसी उत्सव में पधार रहे थे। पूरा रेल प्रशासन इस प्रयास में जुटा था कि मंत्री महोदय समारोह की मधुर और यादगार स्मृतियाँ लेकर जाएँ। श्री सक्सेना पिछले एक हफ्ते से अपने मंडल के विभागीय अधिकारियों के साथ उद्घाटन समारोह के हर पहलू पर सविस्तार चर्चा कर रहे थे। इस बीच दो दुर्घटनाएँ हो जाने से उनका समय जो पूरी तरह से समारोह को अर्पित था, नाहक दुर्घटना स्थल तक आने-जाने में नष्ट हो गया। आज वह चिंतित थे कल परीक्षा की घड़ी है।"[5]

इसी प्रकार डील सोलर कूकर की, किस्सा छबीलदास का, फार्महाउस के लोग, दाँत में फँसी कुरसी, सौन्दर्य हाट, बारात बनाम राजनीति, गंगा से गटर तक आदि व्यंग्य निबंध में वर्णनात्मक शैली के उदाहरण देखने को मिलते हैं।

5.1.2 पत्र शैली :

पत्र शैली में स्वयं लेखक के या रचना के अन्य पात्र के पत्रों द्वारा वस्तु-विन्यास प्रस्तुत किया जाता है। गोपाल चतुर्वेदी ने फाइल पढ़ि-पढ़ि पुस्तक में पत्र शैली के माध्यम से अनेक विसंगतियों पर प्रकाश डाला है। प्रशासन में किस प्रकार एक छोटे से काम को करने के लिए पत्रों के माध्यम से एक दूसरे पर काम को टाला जाता है। इसका उदाहरण पत्र शैली में पशुपालन विकास व्यंग्य लेख में गोपाल जी इस प्रकार देते हैं -

समग्र आर्थिक विकास की एक रूपरेखा फाइल के कुछ अंश

पशुपालन विकास की आवश्यकता पर सरकार ने 16.12.83 को सचिवों की एक समिति का गठन किया था। समिति को निर्देश था कि वह अपनी सिफारिशों मंत्रिमण्डलीय उपसमिति के समक्ष छः माह की अवधि में प्रस्तुत करे। इसी बीच एक सचिव ने अवकाश ग्रहण कर लिया, दूसरे की सेवाएँ उनके राज्य को सौंप दी गई। समय की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए कमेटी ने तीसरे सदस्य से इस समस्या के गहन अध्ययन के लिए यूरोप, अमेरिका, जापान आदि के दौरे के बाद विस्तृत सिफारिशें दी तो रिपोर्ट 'क' पर अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।

कबीना सचिव कृपया देखें।

रा.म. तिवारी

सहायक

3.1.85

अवर सचिव,

अब आवश्यक है कि एक स्वतः पूर्ण टिप्पणी के साथ इस महत्त्वपूर्ण रिपोर्ट का सार संक्षेप हम मंत्रिमण्डल उप-सचिव के विचारार्थ पेश कर दें।

क. वेकटेशन

4.1.85

संयुक्त सचिव

अवर सचिव का प्रस्ताव स्वीकृति के लिए देख लें। इसके पश्चात् एक सप्ताह के अंदर बाकी की कार्यवाई पूर्ण कर मिसिल फिर से पेश की जाएगी।

भ.क. मसीन

4.1.85‘‘6

पेंशन पंचायत और प्रशासन, प्रशासन के उसूल, सरकार और समोसा, कागज और चूहा, देश के लिए दौड़, बे-कार दर्शन आदि लेख गोपाल चतुर्वेदी के पत्र शैली में लिखे व्यंग्य निबंधों के अंतर्गत आते हैं।

‘‘व्यंग्य की सम्प्रेषणीयता के लिए पैरोडी भी एक सशक्त माध्यम है। इस शैली में रचनाकार के मूल शब्दों के उलट-पलट कर व्यंग्य उभर जाता है। हिंदी में कतिपय मुक्तक पदों को छोड़कर ऐसी व्यंग्य रचनाएँ नहीं

मिलती हैं जो पूरी पैरोडी शैली में लिखी गई हों। लेकिन व्यंग्य रचनाओं के बीच-बीच में इस शैली का प्रयोग अवश्य हुआ है।'' (डॉ. ए.एन. चंद्रशेखर रेड्डी, शबरी संस्थान 1/5971, कबूल नगर, शाहदरा दिल्ली 110032 संस्करण 1989 पृ. 138)

5.1.3 पैरोडी शैली :

डॉ. ए. एन. चंद्रशेखर रेड्डी के अनुसार ''व्यंग्य की संप्रषणीयता के लिए पैरोडी भी एक सशक्त माध्यम है। इस शैली में रचनाकार के मूल शब्दों को उलट-पुलट कर व्यंग्य उभारा जाता है। हिंदी में कतिपय मुक्तक पदों को छोड़कर ऐसी व्यंग्य रचनाएँ नहीं मिलती हैं, जो पूरी पैरोडी शैली में लिखी गयी हो। लेकिन व्यंग्य रचनाओं के बीच-बीच में इस शैली का प्रयोग अवश्य हुआ है।''[7] वहीं वागीश सारस्वत के अनुसार 'पैरोडी' मूलतः अंग्रेजी भाषा का शब्द है। हिंदी भाषा में 'पैरोडी' शब्द को यथावत् स्वीकार कर लिया गया है। किसी स्थापित एवं प्रसिद्ध रचना की मूल अनुकृति में तबदीली करके उसी शैली में लिखी गई रचना को पैरोडी कहा जाता है। परौडी में हास्य और व्यंग्य की सर्जना होती है। पैरोडी का प्रयोजन हास्य की सृष्टि करते हुए विडंबनाओं पर प्रहार करना ही होता है। पैरोडी सरसता के साथ हल्के-फुल्के अंदाज में उड़ाई गई खिल्ली या मजाक होता है।''[8] गोपाल चतुर्वेदी ने अपने व्यंग्य निबंधों में जहाँ-तहाँ आवश्यकतानुसार पैरोडी शैली का इस्तेमाल किया है। कहीं उन्होंने अपने व्यंग्य निबंधों के शीर्षक की पैरोडी की। जैसे देश फाइलों का दर्पण है, गंगा से गटर तक, कविता की कूड़ा विधा, धाँधलेश्वर, हमारे राष्ट्रीय शौक, कबीर और कुर्सी दर्शन, जात पूछियो साधु की, भैंस और सरकार, भूतों का विद्रोह, नानक दुखिया सब संसार, कब होंगे काबयाब, मुल्क मचाए शोर आदि।

लक्ष्मी जी की आरती की पैरोडी का उदाहरण देखिए -

''लक्ष्मीं मैया, वर दे।

दूजे का सब सोना, चाँदी,

अपने घर में भर दे।"[9]

इसी प्रकार उन्होंने देशभक्ति गीत हम होंगे कामयाब की पैरोडी की है-

''कब होंगे कामयाब,

कब होंगे कामयाग,

मन में है सवाल

कब होंगे कामयाब।''[10]

जनहित के नाम पर भ्रष्टाचार का काम ऊपर कुर्सी पर विराजमान लोगों के इशारे पर होते हैं। राम नाम की लूट पर इस जनहित की पैरोडी बहुत ही मजेदार है-

''बस जनहित के नाम पर

है फंडो की छूट

सत्त का जो है सगा

लूट सके सो लूट''[11]

इसके अतिरिक्त अन्य और भी पैरोडी शैली के उदाहरण हैं जो निम्नलिखित है-

''आम आदमी को भलाई दे,

उसको दूध-मलाई दे,

भ्रष्ट का काम तमाम करो,

प्रजातंत्र का नाम करो।

जल्दी गति शैतान की-

जय हो हिंदुस्तान की।"[12]

''भूख से न मरता है,

आग से न जलता है।

सूखे में जिंदा है,

बाढ़ में न डूबा है।

भारत का आदमी,

वाकई अजूबा है।"[13]

''देश की इज्जत का रखवारा

सबका नेता भैया प्यारा।"[14]

''पृथ्वी है प्लेट

इस पर से खाओ

चाहे कटलेट या

आमलेट।"[15]

गोपाल चतुर्वेदी ने जीवन-पर्यंत प्रशासनिक पद पर रहते हुए भी सभी सरकारी घटनाओं के प्रत्येक पहलू पर पैनी नजर रखी और मौका पड़ने पर उसे कलमबद्ध भी किया। कुछ व्यंग्य विनोद के साथ इन्होंने निम्नलिखित प्रकार से 'मधुशाला' की पैरोडी की है-

''मेरी अर्थी के संग रखना

चंद फाइलें, कुछ हाला

राम नाम का जाप न करना

जपना सर-सर की माला

मेरी अस्थी विसर्जित करके दफ्तर में लिखवा देना

जब तक संभव था

जीवन में इसने हर निर्णय टाला।"[16]

इस प्रकार जहाँ-जहाँ आवश्यकता पड़ी सामाजिक विसंगतियों को दिखाने के लिए गोपाल चतुर्वेदी ने अपनी रचनाओं में पैरोडी शैली के रूप में इन विद्रूपताओं पर व्यंग्य किया।

5.1.4 संवाद शैली :

गेपाल चतुर्वेदी ने अपने व्यंग्य साहित्य में संवाद शेली का खूब प्रयोग किया। इनके अधिकतर व्यंग्य लेखों में संवाद शैली देखने को मिलती है। संवाद का यह प्रयोग व्यंग्य को संप्रेषण के धरातल पर तो अद्वितीय बनाता ही है शिल्प की दृष्टि से भी अनूठा बना देता है। व्यंग्य निबंधों में संवाद शैली का प्रयोग गोपाल चतुर्वेदी की विशिष्टता है। हालांकि परंपरागत कसौटी पर कसकर देखने वाले आलोचक इसे वैचित्र्य की संज्ञा भी दे सकते हैं। लेकिन यह प्रयोग कलाकृति की आवश्यकता है। यह शिल्पगत प्रयोग व्यंग्य को क्षमतावान बनाता है। परंपरा के अनुसार अगर देंखे तो साहित्य की कहानी तथा नाटक में ही कथोपकथन का प्रयोग होता रहा है; लेकिन गोपाल जी ने अपने व्यंग्य निबंधों में इसका बड़ा ही सटीक प्रयोग किया है। इस कथोपकथन के प्रयोग से पाठकों में रचना के प्रति अपनापन जागृत होता है।

गोपाल चतुर्वेदी के ज्यादातर निबंधों में कथोपथन को प्रयोग किया हुआ है। कुछ निबंधों में कथोपकथन की प्रक्रिया अत्यल्प है जबकि अनेक निबंधों में कथोपकथन या संवाद बड़े पैमाने पर होता है। इनके कुछ व्यंग्य तो सिर्फ संवाद में ही पूर्ण हो जाते हैं। कूड़े का समाजवाद व्यंग्य लेख में इसकी संवाद शैली का नमूना देखिए-

‘‘अखबारों में छप रहा है कि दिल्ली हैजे की चपेट में है। क्या यह सच है?‘‘

हो सकता है

आपने कोई केस देखा क्या?

‘‘हाँ! अस्पताल में कै-दस्त के कई मरीज आकर स्वर्ग सिधार गए। पर बदहजमी, मिलावट कच्ची शराब, कुपोषण आदि कई कारणों से मतली आ सकती है। ऐसा आवश्यक नहीं कि हैजा की हो।‘‘

पर अभी तक इतने लोग मर तो नहीं रहे थे ?

अरे भई! मौत का क्या ठिकाना। भले-चंगे व्यक्ति बैठे-ठाले चल बसते हैं।‘‘

लेकिन आप तो हैजे की सुइयां लगा रहे हैं। लाखों लगा भी चुके हैं।‘‘

‘‘यह तकनीकी बाते आप जैसों की समझ में आने से रहीं। बुखार आए तो अक्सर मलेरिया की दवा भी देते हैं। टीका चिकनपाक्स का भी लगाते हैं, टी.बी. और टायफाइड का भी। इसका यह मतलब तो नहीं कि इनमें से सारी बीमारियाँ हैं।‘‘

तो आप यों ही सताने के शौक में बदन को छली करते हैं।

यही तो आपको पता नहीं है। कई बार इंजेक्शन बचाव के लिए लगाए जाते हैं। आपने अपनी ‘विल‘ लिखवा दी।

जी हाँ

ज्यों जिंदा रहने पर आपने ‘विल‘ बनवा ली, हम बहुधा भविष्य का ख्याल कर सुइयां लगा देते हैं जिससे न बीमारी हो न आपकी जान जाए। अपना समझकर मैं आपको राज की बात बताता हूँ। कोई भी मरीज यदि दवा के बावजूद जिंदा बच निकले तो समझ लो कि किसी दुआ का असर है।”[17]

गोपाल चतुर्वेदी छोटे-छोटे कथोपकथन के माध्यम से संवाद शैली का प्रयोग करते हैं। इसका उदाहरण गाँधी बनाने का संकल्प व्यंग्य लेख में इस प्रकार देखा जा सकता है-

‘‘कभी मौका पड़ा तो लोन दिलवा दोगे, भैया।

इधर लोन-मेले बंद हैं। पर क्यों चाहिए।

बच्चों की स्कूल-यूनिफार्म, किताबें, घर के राशन-पानी के लिए।

हम योजनाओं के लिए उधार देते हैं रोजमर्रा के खर्चों के लिए नहीं।

पर सरकार तो कर भी वसूलती है और कर्ज भी।"[18]

गोपाल चतुर्वेदी के अधिकतर व्यंग्य लेख में कहीं कम हो कहीं अधिक संवाद शैली का प्रयोग हुआ है। उनके व्यंग्य लेख देख फाइलों का दर्पण है। दुम की वापसी, फ्री के फायदे, लाल आँख के फायदे, छोटे नेता और नाक, कुत्ता चाँद पर भूँकता क्यों है, हमारे राष्ट्रीय शौक आदि में कहीं-कहीं संवाद शैली का प्रयोग हुआ है जबकि प्रमोशन और पीएच.डी. तकनीक पालिटिक्स और पटना कूड़े का समाजवाद, दहेज की दरकार, बिल का सदाचार आदि व्यंग्य लेख पूरे ही संवाद शैली में लिखे गए हैं।

5.1.5 साक्षात्कार शैली :

साक्षात्कार शैली की तरह स्वयं लेखक या मैं पात्र अन्य आदमी से मुलाकात की घटना का विवरण देता है। इस दृष्टि से यह शैली विवरणात्मक शैली का एक अंग है। इस शैली में दो पात्रों के या पात्रों के एक समूह के बीच संवादों के सहारे वस्तु का प्रस्तुतिकरण किया जाता है। इस शैली की अधिकांश रचनाओं में दो पात्रों का ही चित्रण होता है। निबंध की शुरूआत में विवरणात्मक शैली की तरह रचना में पात्र का विवरण देता है।

इस शैली में एक या अधिक व्यक्ति दूसरे एक व्यक्ति से किसी निश्चित स्थान और समय पर बैठकर कुछ प्रश्न करते हैं जिसका उत्तर सामने बैठे व्यक्ति से अपेक्षित होता है। गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य 'चुनाव वर्ष: कार्यकर्ताओं की तलाश' पूरा ही साक्षात्कार शैली पर आधारित है। जहाँ चुनाव का समय नजदीक आ गया है। पार्टी के नेता ऐसे कार्यताओं की तलाश में हैं जो उनकी चापलूसी भी कर सकें और जनता

को भरमा भी सकें। अतः इन कार्यकर्ताओं की तलाश में वे साक्षात्कार के माध्यम से व्यक्त करते हैं। एक नमूना देखिए-

‘‘दूसरे केंडिडेट को बुलाया गया।

आप पढ़े-लिखे हैं।

पाँच साल पहले बी.ए. किया था।

क्या करते हैं?

‘पैसे लेकर जरूरतमंद की अर्जी लिखता हूँ। मुकदमों में पुलिस की ओर से गवाही देता हूँ। जनता के हित में खाने-पीने की दुकानों का माल चखकर उनके स्तर पर निगरानी रखता हूँ। सर! ठसी तरह से समाज सेवा के कामों में वक्त गुजर जाता है।

आपका किस वाद में यकीन है।

जो भी आपका वाद हो सर!

....देश को नेता कैसा हो, बड़े नेता ने पूछा।

बिल्कुल आपके जैसा हो प्रत्याशी ने उत्तर दिया।’’[19]

इसी प्रकार ‘भगवान न हो पाने का संत्रास‘ लेख में गोपाल जी ने साक्षात्कार शैली के माध्यम से ही आधुनिक मानसिकता में व्याप्त जहालत, अज्ञान और मूर्खता को बड़े ही कौशल से प्रस्तुत किया है-

‘‘आपने तुलसी दास का नाम सुना है?

जी नहीं

रामचरितमानस का

क्या वह रामायण जैसी है?

जी हाँ

सुना ही नहीं। टी.वी. पर देखा भी है।

इसके लेखक कौन थे ?

सर रामानन्द सागर।

राम के बारे में कुछ बता सकते हैं?

बिल्कुल सर! राम का रोल अरुण गोविल ने किया है। पहले फिल्मों में छोटे-छोटे रोल करते थे। अब तो स्टार बन गए हैं। उनकी बीवी सीता को रावण उठा ले गया। उन्होंने ढ़ेर सारे बंदर जोड़े और टेक्नीकलर तीरों की बौछार कर रावण को मार ही डाला। बीच-बीच में समय निकालकर गोविल राम ने चुनाव प्रचार भी किया।"[20]

इस प्रकार अपने व्यंग्य लेखों में गोपाल चतुर्वेदी ने आधुनिक मानसिकता की जड़ता और मूर्खता को साक्षात्कार शैली के माध्यम से दिखाने का एक सफल प्रयास किया है।

5.1.6 प्रश्नोत्तर शैली :

यह साक्षात्कार शैली से मिलती-जुलती शैली है। परंतु साक्षात्कार शैली से थोड़ा अलग इस शैली में सामान्य संवाद प्रश्न और उत्तर के रूप में होता है। साक्षात्कार शैली की तरह इसमें विवरण की

आवश्यकता बिल्कुल भी नहीं होती। इस शैली में दो पात्रों के बीच के संवाद के सहारे परिस्थितियों का प्रस्तुतीकरण और स्पष्टीकरण हो जाता है। गोपाल चतुर्वेदी के अधिकांशतः व्यंग्य निबंधों में प्रश्नोत्तरी शैली के उदाहरण देखने को मिलते हैं। एक उदाहरण प्रस्तुत है-

''आपके लाडले क्या कर रहे हैं? मैंने एक भजिया आपरेशन में दखल दिया।

सरकार में है।

वह दफ्तर में जाते हैं? मैंने सवाल किया।

क्यों? उन्होंने सवाल दागा।

इधर संदीप दिनभर उनके साथ मटरगश्ती करते हैं।

आपको कोई एतराज है? उन्होंने पंचम का आलाप किया।

नहीं तो! पर आजकल संदीप कुछ गाली-गलौच ज्यादा करते हैं। हम तो चाहते हैं कि आपके बेटे उन्हें समझाएँ शायद उनकी मान लें।

गनीमत है। हरीश का ख्याल है कि लातों की आदी सरकार बातों से काबू नहीं आएगी।''21

अपना बड़ा न बनने का दर्द, खम्भा होन की नियति, दादा का अहिंसा-उसूल, देश फाइलों का दर्पण है आदि व्यंग्य निबंधों में गोपाल चतुर्वेदी ने प्रश्नोत्तर शैली का प्रयोग किया है।

5.1.7 अन्योक्ति शैली :

जिस आदमी की पोल खोलनी है। उससे बचकर उसके साथ उल्टे रागात्मक संबंध बनाए रखना, व्यंग्यकार के लिए आवश्यक होता है। असल में व्यंग्य की महिमा इसी में रहती है। यह बचने की प्रवृत्ति,

वकृता के साथ कहने वाली प्रवृत्ति व्यंग्यकार को अनेक तरकीबें अपनाने को बाध्य करती हैं। इन तरकीबों में अन्योक्ति भी एक है। अन्योक्ति में व्यंग्यकार विसंगतियों को और किसी पात्र मुख्यतः जानवरों और पक्षियों पर लागू करके अपने कथ्य को सम्प्रेषित करता है। कभी-कभी राजाओं की कहानी, पौराणिक कथा आदि के माध्यम से भी व्यंग्य का सफल सम्प्रेषण किया जा सकता है।

गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य लेख 'आदमी और गिद्ध' में इस शैली का उदाहरण मिलता है। आधुनिक जीवन की अनेक विकृतियों पर इस लेख में कुत्ते की बातों के द्वारा टिप्पणी की गई है। गिद्ध आपस में बात कर रहे हैं- ''गिद्ध डैने फैलाए आकाश के चक्कर काट रहे हैं, जैसे छोटे जहाज किसी शहर की टोह ले रहे हों। गिद्धों की नजर धरती पर एक घर पर टिकी है।

एक किशोर गिद्ध ने दूसरे से पूछा ''अभी कितनी देर है।?

बुजुर्ग ने उसे सलाह दी ''इंतजार और अभी और अभी।"

किशोर ने रूखे स्वर में असंतोष जताया, ''आपको तो सिर्फ इंतजार सूझता है।

यहाँ कल से आँखें गड़ाए हैं। यह इंसान है कि टें बोलता ही नहीं है।"[22] इसमें लेखक ने गिद्धों के वार्तालाप के माध्यम से इंसानों के छल-छद्म को उजागर किया है। सत्ता और सांड, चुनाव और चूहे, सियार और जंगल का बूढ़ा शेर, महानगर में भटका गधा आदि व्यंग्य निबंधों में भी अन्योक्ति शैली का प्रयोग किया गया है।

5.1.8 रेखाचित्र शैली :

व्यक्तियों के व्यंग्य चित्र खींचने के लिए रेखाचित्र की शैली सबसे अधिक उपयुक्त एवं प्रभावशाली होती है। रेखाचित्र की तरह व्यंग्यकार इस शैली के अंतर्गत व्यंग्य पात्र की जीवनी संबंधी

विवरण देकर उसका व्यंग्य चित्र खड़ा करता है। व्यंग्य पात्र का रहन-सहन, उसकी मानसिक दशा, पोशाक, कार्यक्षेत्र आदि में असंगतियों को दिखाता है।

गोपाल चतुर्वेदी अपने व्यंग्य निबंध 'कब होंगे कामयाब' में रेखाचित्र शैली का प्रयोग करते हुए कहते हैं- ''कहने को एक प्राथमिक चिकित्सा केंद्र है पर यहाँ तो एक कमरा है। सामने अहाते में किसी किसान के बैल बँधें हैं। कौन जाने सरपंच के हैं कि किसी और हस्ती के। कोई बीमार पड़े तो सीधा ऊपर जाता है या शहर। कमरा खंडहर हो चला है और बताता है कि यहाँ कभी कोई डॉक्टरभूले-भटके भी नहीं आया है। पता नहीं गाँव वाले हम होंगे कामयाब का प्रेरणा गीत कभी सुनते हैं कि नहीं। सुनते भी है तो समझते है कि नहीं। अगर समझते हैं तो कामयाबी के भविष्य को सोचते हैं कि नहीं।''[23]

5.1.9 विवरणात्मक शैली :

व्यंग्य रचनाओं में यह शैली सबसे अधिक मात्रा में मिलती है। इस शैली में रचना का 'मैं' पात्र अनेक वस्तुओं, अपने जीवन की अनेक घटनाओं का विवरण इस ढ़ंग से प्रस्तुत करता है कि आँखों के सामने वे साक्षात् खड़ी हो जाए। अपने निजी जीवन की घटनाओं के रूप में विवरण देना ही व्यंग्यकार की विशेषता है। लेकिन अधिकांश रचनाओं में यह केवल बहाना मात्र रहता है। रचना में वर्णित सभी विसंगत घटनाओं का अनुभव रचना के 'मैं' पात्र अपने काल्पनिक तथा विवरणात्मक प्रतिभा की सहायता से विसंगत घटनाओं एवं परिस्थितियों का पाठक की आँखों के सामने रनिंग कमेण्टरी की तरह विवरण देता है।

विवरणात्मक शैली में सिद्धहस्त व्यंग्यकार द्वारा प्रस्तुत घटनाएँ चाहे युद्ध की हो या शिकार की हो, यात्रा की हो या इतिहास की हो या कल्पना की, हमारी आंखों के समक्ष घटित होती हुई प्रतीत होती

है। यह शैली मुख्यतः व्यंग्य निबंधों में पाई जाती है। एकाध पात्र तथा घटनाओं के चित्रण के द्वारा इस शैली में लिखे गए निबंधों में कथात्मकता भी देखने को मिलती है।

गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य निबंधों में विवरणात्मक शैली के उदाहरण खूब देखने को मिलते हैं। एह उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है-''मैं जीवन की निरक्षरता को सोच रहा हूँ। समय किसी के रोके नहीं रुकता। कितने दिनों से विश्व कप का इंतजार था वो गया। अय्यर अनुभाग अधिकारी बनना चाहते थे वे बन गए। पर कितने दिन? एक दिन उम्र की साइकिल के टायर घिसे तो रिटायर हो जाएँगे। घर के किसी कोने में रद्दी की तरह पड़े-पड़े किसी रोज बिक जाएँगे। फिर भी लोग कैश और कलैण्डर के चक्कर में रहते हैं, गोरख ने पहली बार अय्यर पर चोट की। वर्मा ने हाँ में हाँ मिलायी, वाकई गोरख! देखते-देखते जीवन के मूल्य बदल गए हैं। पूरा माहौल ही भ्रष्टाचार का है। कमाने वाले मंत्रालय की सफाई के नाम पर पैसा कमा रहे हैं। लोग चंदन का टीका-तिलक लगाते हैं, धर्म के उपदेशों की बात करते हैं और अधर्म के काम करते हुए उन्होंने फाइलों पर झुके अय्यर को अर्थपूर्ण दृष्टि से ताका।"[24] इसके अतिरिक्त इनके अधिकतर व्यंग्य निबंधों में विवरणात्मक शैली देखने को मिलती है।

5.1.10 मिथकीय शैली :

ऐसी परम्परागत कथा जो अतिप्रसृष्ट घटनाओं और प्रभावों से संबंधित होती है। उसे 'मिथक' कहते हैं। परम्परा पर आधारित होने के कारण मिथक का संबंध वास्तविकता से ज्यादा विश्वास से जुड़ा होता है। मिथक में एक नई दुनिया की कल्पना होती है। परम्परागत विश्वास के कारण उसे पूर्णतः नकारा भी नहीं जा सकता। जैसे रावण के दस सिर आदि भ्रमजनक लगते हैं लेकिन ये सब एक सामाजिक परम्परा में सतत प्रचलित होते रहने के कारण हमारी जातीय स्मृति के अंग बन गए हैं। यहाँ पर इस बात से

अभिप्राय मिथकों की वास्तविकता पर विचार करके उनके प्रति लोगों में विश्वास जगाना नहीं हैं बल्कि व्यंग्यकार अपने कथ्य की सम्प्रेषणीयता के लिए किस प्रकार मिथकों का, मिथकीय पात्रों तथा घटनाओं का उपयोग करता है। इसका विचार करना है।

विश्वासों पर आधारित होने के कारण मिथक व्यंग्यकार के लिए उसका काम आसान कर देते हैं। व्यंग्यकार उन प्रसंगों तथा पात्रों को नए संदर्भ में लाकर प्रस्तुत करता है। उन प्रसंगों तथा पात्रों के प्रति एक परम्परागत दृष्टि होने के कारण व्यंग्यकार के कथ्य का सम्प्रेषण बहुत आसानी से हो जाता है। स्वभावतः पूर्व के बल पर बहुत विस्तृत अर्थ से सम्पन्न होने वाले मिथक नए परिवेश में आक्षेपित हो जाने के बाद अर्थ के नए आयामों को खोल देते हैं और व्यंग्य की धार को तेज करते हैं। व्यंग्यकार मिथकीय पात्रों और कथाओं के माध्यम से आज के जीवन के विघटित मूल्यों पर गहरा व्यंग्य करता है। राम, कृष्ण, एकलव्य, अर्जुन, गांधारी आदि मिथकीय पात्रों तथा उनकी कथाओं के सहारे युग जीवन के भ्रष्टाचार एवं विसंगतियों पर व्यंग्य करना आसान हो जाता है। इसलिए मिथकों से मुक्त व्यंग्य रचनाओं में प्रतीकात्मकता के कारण अर्थ का बहुत बड़ा आयाम निर्मित हो जाता है।

गोपाल चतुर्वेदी ने आधुनिक कन्हैया अर्जुन संवाद तथा गांधारी की पट्टी शीर्षक लेख में मिथकीय प्रसंगों और पात्रों द्वारा व्यंग्य दिखाई देता है। श्री कृष्ण और अर्जुन के संवाद के माध्यम से वे आज के राजनीतिक नेताओं के भ्रष्टाचार तथा कुर्सी की लालसा पर करारा व्यंग्य किया है -''कन्हैया गुरू भी पहुँचे हुए हैं। सब समय का फेर है। द्वापर के कृष्ण ने अर्जुन को गीता दी। इक्कीसवीं सदी के अर्जुन को कन्हैया गुरू बिना सोचे समझे विध्वंस का पलीता दे गए। अर्जुन थोड़ा हिचके पर उनके सामने कुर्सी का सवाल था। उन्होंने आव देखा न ताव, बिना किसी तैयारी के शिक्षण संस्थाओं में आरक्षण का मंडल बाण चला डाला। नतीजे की चिंता उन्हें होती है जो कल का सोचे। सत्ता के आधुनिक अर्जुन कल का नहीं, सिर्फ अपनी कुर्सी के बेशकीमती कमाऊ पल का सोचते हैं।''[25]

5.1.11 फंतासी शैली :

वर्तमान जीवन में व्याप्त विसंगति और एब्सर्डिटी को तल्खी के साथ अतिरंजित बनाकर चित्रित करने के लिए व्यंग्यकारों ने 'फंतासी' को एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनाया है। इस प्रकार की रचनाओं में एक ऐसी दुनिया की कल्पना की जाती है जो अवास्तविकता, आश्चर्यजनक और विस्मयपूर्ण लगती है। फंतासी शैली में विकृति को ही प्रकृति के रूप में चित्रित करते हुए लेखक विकृतियों या विसंगतियों तथा उनके परिणामों की वास्तविकता का पाठकों को बोध कराना चाहता है।

साधारणतः व्यंग्यकार फंतासी की संरचना करते समय कथा के ऐसे ताने-बाने तैयार करता है जिसमें विसंगतियों और व्यंग्यात्मक स्थितियों को जोड़कर अपने कथ्य को व्यंग्यात्मक शैली में पाठकों तक पहुँचाता है। यह शैली मुख्यतः व्यंग्य कहानियों, व्यंग्य उपन्यासों और व्यंग्य कविताओं में पाई जाती हैं। गोपाल चतुर्वेदी की फंतासी लेखन शैली का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है- मैंने भी जब यह गाना सुना था ऐसा ही सपना संजोया था। मैंने ही क्या, इस पूरी युवा और कुंवारी पीढ़ी ने यही स्वप्न देखा होगा, जो सब माँ-बाप बनकर समय से पिछड़ गई है। सोंधी सी महकती धरती, हल्की बूँदा-बाँदी और किसी सुंदरी का साथ। एक बार जब बूँदे पड़ रही थीं, तब बड़ी हिम्मत जुटा अपनी एक सहपाठिन से कहा भी कि बड़ा प्यारा मौसम है, चलो थोड़ा सा घूम आएँ। उसने मुझे सिर से पैर तक घूरा। मेरे स्कूटर को देखा, जो मेरे पिताजी का था और उपेक्षा भरे स्वर में इनकार कर दिया। मेरे व्यक्तिगत अनुभव ने मुझे विश्वास दिला दिया है कि अपने देश में जीवन का सारा रोमांस तो फिल्मी पर्दे के साथ में है और पूरा कटु सत्य उसके बाहर।"[26]

गोपाल चतुर्वेदी ने अपनी व्यंग्यात्मक निबंधों में प्रतीकात्मक, नाटकीय आदि कथा शैली के साथ ही भाषण शैली, सामान्तर कथा शैली, आत्मकथात्मक कथा शैली, विश्लेषण शैली, व्याख्यापरक शैली,

वार्तालाप शैली, यात्रा शैली आदि का प्रयोग विशेष रूप से किया है। इनके प्रयोग से व्यंग्य की धार और भी पैनी और उसके मार या प्रहार की प्रकृति भी अत्यंत घातक हो गई है।

संदर्भ-सूची :

1. डॉ. मुकेश चंद्रगुप्त, हिंदी-हिंदी शब्दकोश, लक्ष्मी प्रकाशन, जी 30/बी गली नं. 4 गंगा विहार, दिल्ली-110094, संस्करणः 2013, पृष्ठः 701
2. सं. रामचंद्र वर्मा, संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, नई दिल्ली, सं. संवत्ः

   2065 वि. पृ. 929

3. सं. धीरेंद्र वर्मा, हिंदी साहित्यकोश भाग-1, प्रकाशकः ज्ञानमंडल लिमिटेड, संत कबीर रोड,

   वाराणसी,सं. 2005, पृ. 680-681

4. गोपाल चतुर्वेदी, फार्म हाउस के लोग, ग्रंथ अकादमी, 1659, पुराना दरियागंज, नई दिल्ली, 110002, सं. 2011, पृ. 16

5. वही, पृ. 95

6. गोपाल चतुर्वेदी, फाइल पढ़ि-पढ़ि, भारतीय ज्ञानपीठ, 18-इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, 110003, सं. 2008, पृ. 146

7. डॉ. ए. एन. चंद्रशेखर रेड्डी शबरी संस्थान 1/5971, कबूल नगर, शाहदरा दिल्ली-110032, सं.-1989, पृ.- 138

8. वगीश सारस्वत, व्यंग्यर्षि शरद जोशी, शिल्पायन प्रकाशन, 10295, लेन नं. 1 वेस्ट गोरखपार्क, शाहदरा दिल्ली-110032, सं.-2013, पृ.- 270

9. गोपाल चतुर्वेदी, निर्लज्ज समय के आस-पास, मेधा बुक्स, एक्स-11, नवीन, शाहदरा दिल्ली-110032, सं.-2012, पृ.- 155

10. वही, पृ. 193

11. वही, पृ. 39

12. वही, पृ. 29

13. गोपाल चतुर्वेदी, सत्तापुर के नकटे, सत्साहित्य प्रकाशन, 205, बी चावड़ी बाजार, दिल्ली-110006, सं.-2014, पृ.-33

14. गोपाल चतुर्वेदी, कुर्सीपुर का कबीर, ज्ञानगंगा, 205, सी चावड़ी बाजार, दिल्ली-110006, सं.-2010, पृ.-144

15. गोपाल चतुर्वेदी, आज़ाद भारत में कालू, प्रभात प्रकाशन, 4/19 आसफ़अली रोड, नई दिल्ली, सं.-1993, पृ.-137

16. गोपाल चतुर्वेदी, संकलित व्यंग्य, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन 5, इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-2, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070, सं.-2012, पृ.-15

17. गोपाल चतुर्वेदी, धाँधलेश्वर, भारतीय ज्ञानपीठ, 18-इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, 110003, सं. 2008, पृ. 280-281

18. गोपाल चतुर्वेदी, फाइल पढ़ि-पढ़ि, भारतीय ज्ञानपीठ, 18-इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई

दिल्ली, 110003, सं. 2008, पृ. 103

19. गोपाल चतुर्वेदी, 51 श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, डायमंड बुक्स, एक्स-30, ओखला, इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110020, सं.-2010, पृ.-56-57

20. गोपाल चतुर्वेदी, संकलित व्यंग्य, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन 5, इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-2, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070, सं.-2012, पृ.-10-11

21. वही, पृ.-112

22. गोपाल चतुर्वेदी, आदमी और गिद्ध, ज्ञानगंगा, 205, सी चावड़ी बाजार, दिल्ली-110006, सं.-2010, पृ.-63

23. गोपाल चतुर्वेदी, निर्लज्ज समय के आस-पास, मेधा बुक्स, एक्स-11, नवीन, शाहदरा दिल्ली-110032, सं.-2012, पृ.- 192

24. गोपाल चतुर्वेदी, फाइल पढ़ि-पढ़ि, भारतीय ज्ञानपीठ, 18-इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, 110003, सं. 2008, पृ. 103

25. गोपाल चतुर्वेदी, संकलित व्यंग्य, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन 5, इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-2, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070, सं.-2012, पृ.-06

26. गोपाल चतुर्वेदी, धाँधलेश्वर, भारतीय ज्ञानपीठ, 18-इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, 110003, सं. 2008, पृ. 25

उपसंहार

युगीन किसी वस्तु, घटना या प्रसंग के तथ्यपूर्ण आधार पर की गई वक्रोक्ति पूर्ण अभिव्यक्ति व्यंग्य है। स्वातंत्र्योत्तर काल में व्यंग्य की बाढ़ सी आ गई है। अतः अब यह नहीं कहा जा सकता कि साहित्य में व्यंग्य का आभाव है, व्यंग्य नगण्य है, व्यंग्य एक साधन है, व्यंग्य एक अभिव्यक्ति प्रणाली है तथा व्यंग्य एक शैली या उपविधा है। आज व्यंग्य हिंदी साहित्य की एक स्वतंत्र, सशक्त एवं स्वायत्तपूर्ण विधा है। स्वतंत्र्योत्तर काल के सामज में अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, प्रांतिक-भेद, हिंसा, निर्दयता, बेरोजगारी, जाति-भेद, पदलोलुपता, मिलावट, अविश्वास, नशा आदि से भरा हुआ तनाव और संघर्षपूर्ण जीवन हम देख रहे हैं। परिणाम स्वरूप मनुष्य के जीवन की मान्यताएँ ही बदलने लगी हैं। अतः शाश्वत मूल्यों को बनाए रखने तथा विसंगतियों से समाज को निकालने के लिए व्यंग्य की अत्यधिक आवश्यकता महसूस होने लगी है और व्यंग्यकारों ने भी समाज को सुधारने एवं परिवर्तन लाने के लिए समाज को जागृत करने के लिए व्यंग्य का प्रयोग हथियार के रूप में किया है। इस दिशा में कदाचित् उन्हें सफलता भी मिली है।

हिंदी में व्यंग्य साहित्य के इतिहास पर यदि हम दृष्टि डालें तो हम देखेंगे कि नाथों एवं सिद्धों के साहित्य से हिंदी में व्यंग्य की शुरूआत हो जाती है। लेकिन भक्ति काल में कबीर के काव्य में ज्यादा व्यंग्य की तीक्ष्णता के दर्शन होते हैं। कबीर के काव्य में, धार्मिक कर्मकाण्ड, सामाजिक आडम्बरों पर पैंने व्यंग्य देखने को मिलते हैं। उनकी उलटबासियों में व्यंग्य ही है। अतः हिंदी साहित्य में कबीर से व्यंग्य की शुरूआत संभवतः मानी जाती है। इसके पश्चात् रीति काल में इसकी चाल थोड़ी धीमी हो जाती है। किंतु स्वतंत्रता से पूर्व आधुनिक काल में व्यंग्य फिर से एक नए रूप में अवतरित होता दिखाई पड़ता है। भारतेंदु युग में भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालमुकुंद गुप्त आदि के साहित्य में अग्रेजों द्वारा भारतीय जनता पर किए जा रहे शोषण का चित्रण व्यंग्य रूप में ही मिलता है। फिर द्विवेदी युग में मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में और

लगभग 1930 के आसपास और उसके बाद जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद, निराला के साहित्य में व्यंग्य का तीखापन देखने को मिलता है। इन साहित्यकारों के साहित्य में जहाँ अंग्रेजों से शोषित पीड़ित जनता की सहानुभूति में व्यंग्य के दर्शन होते हैं वहीं स्वतंत्र्योत्तर समाज के साहित्यकारों ने समाज में जाति, धर्म, सम्पन्नता आदि के आधार पर दबे कुचले लोगों, राजनीतिक भ्रष्टाचारों आदि को अपने साहित्य में व्यंग्य के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया। जिसमें रामबिलास शर्मा, धूमिल, नागार्जुन आदि का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है। किंतु अब तक के इन साहित्यकारों के साहित्य में व्यंग्य उनकी कविता, उपन्यास, कहानी आदि में एक शैली के रूप में दिखलाई पड़े।

हरिशंकर परसाई आधुनिक गद्य साहित्य में व्यंग्य के प्रयोक्ता एवं प्रस्तोता हैं। हिंदी के पहले और सबसे सशक्त व्यंग्यकार के रूप में उनकी प्रशस्ति है। परसाई जी ने ही 'व्यंग्य' को साहित्य में पूर्ण रूप से स्थापित करने का कार्य किया है। परसाई के साथ-साथ शरद जोशी तथा रवींद्रनाथ त्यागी ने व्यंग्य के स्वरूप को नए आयाम दिए। इसे शैली के आवरण से निकालकर साहित्य में विधा के रूप में स्थापित करने का श्रेय भी इन व्यंग्यत्रयी को ही जाता है। इनके बाद लतीफ घोंघी, डॉ. शेरजंग गर्ग, श्रीलाल शुक्ल, कन्हैया लाल नंदन, बालेंदु शेखर तिवारी, डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी आदि व्यंग्यकारों ने इस व्यंग्य विधा की परम्परा को आगे बढ़ाया तथा व्यंग्य के स्वरूप को अलग-अलग तरह से चित्रित करते हुए व्यंग्य का विवेचन एवं विश्लेषण किया।

आधुनिक समय में व्यंग्य की रचना करने वाले व्यंग्यकारों में श्री गोपाल चतुर्वेदी का नाम प्रमुख रूप से सामने आता है। प्रशासन में रहते हुए इन्होंने प्रशासन में हो रहे भ्रष्टाचार, लालफीताशाही, अफसरशाही, जनतंत्र में धनतंत्र और भ्रष्टतंत्र के तालमेल से स्थिति को पूर्ण रूप से बेकाबू होते देखा। अतः समाज को इन स्थितियों से अवगत कराने के लिए उन्होंने व्यंग्य का सहारा लिया। हालांकि शुरू-शुरू में इनके कुछ लेख अंग्रेजी में आए किंतु मातृभाषा के लगाव ने इन्हें हिंदी में लिखने के लिए प्रेरित

किया। हिंदी में भी लेखन की शुरूआत इन्होंने काव्य से की। इनके दो काव्य संग्रह 'कुछ तो हो' और 'धपू की तलाश' प्रकाशित हुए किंतु अफसरी करते हुए प्रशासन और राजनीति को करीब से देखते हुए उनकी खामियों और विसंगतियों को देखकर उन्हें जनता तक पहुँचाने के लिए उन्होंने व्यंग्य का सहारा लिया। आज वे एक व्यंग्यकार के रूप में साहित्य में स्थापित भी हो चुके हैं।

व्यंग्य साहित्य की उपादेयता पर विचार करने पर यह कहा जा सकता है कि 'व्यंग्य' व्यंग्यकार की बुद्धि का चमत्कार नहीं है बल्कि वह समाज के प्रति एक महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व को संभालता है। समाज में व्याप्त विसंगतियों, विद्रूपताओं, कुरीतियों आदि को देखकर एक व्यंग्यकार के मन में रोष एवं आक्रोश उत्पन्न होता है जिसे वह अपनी लेखनी के माध्यम से जनता के समक्ष रखते हुए उसमें आक्रोश उत्पन्न करने की कोशिश करता है। गोपाल चतुर्वेदी ने भी इस प्रकार की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, प्रशासनिक घटनाओं को करीब से देखा परखा और उससे रुबरु होते हुए उसे जनता तक पहुँचाकर जनता को जागृत करने का प्रयास किया।

व्यंग्य विसंगतियों के परिवेश में ही उभरता है। ये विसंगतियाँ न ही रोचक हो सकती हैं और न ही उन्हें हँसकर टाला जा सकता है। सचमुच युगीन सत्यों को व्यक्त करने वाला व्यंग्य, वक्त की पेचीदगियों, आपाधापियों, दुर्घटनाओं को रेखांकित करने वाला व्यंग्य मात्र मनोरंजन का साहित्य नहीं है, बल्कि वह विपरीत परिस्थितियों के प्रति असंतोष जगाने के साथ-साथ बदलाव की आकांक्षा को भी आंदोलित करता है। गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य भी इस नियम के अपवाद नहीं हैं। इन्होंने अपने व्यंग्य लेखों के माध्यम से युगीन सत्यों, वक्त की पेचीदगियों, आपाधापियों, विपरीत परिस्थितियों, धार्मिक आडम्बरों तथा रूढ़िगत मान्यताओं पर गहरा प्रहार किया है। गोपाल चतुर्वेदी ने अपने लंबे लेखकीय और प्रशासकीय अनुभवों से जिन विसंगतियों, विद्रूपताओं, विडंबनाओं, असहनीय परिस्थितियों को देखा-परखा, जाना-पहचाना है। उन्हें अपनी बेबाक, मधुर मगर तीखी खिलदंड़ी शैली में मुक्त भाव से व्यक्त किया है।

गोपाल चतुर्वेदी वर्तमान समय में ऐसे गिने-चुने वरिष्ठ व्यंग्यकारों में हैं जो व्यक्ति और व्यवस्था में मौजूद कमजोरियों को ही नहीं, विसंगत और त्रासद स्थितियों को भी बड़ी बेबाकी से व्यक्त करने में विश्वास रखते हैं। उन्होंने हर स्थिति में मनुष्य की कमजोरियों, गुस्ताखियों, स्वार्थपरताओं, मार्मिकताओं को अपनी कलम का शिकार बनाया है। इनके मारक व्यंग्यबाणों ने समाज के हर उस वर्ग को अपना निशाना बनाया है जिनके लिए मानवीय मूल्य, संवेदना और सरोकार कोई मायने नहीं रखते। वे हवा से भरे गुब्बारे की तरह हैं, जिन्हें इनके व्यंग्यों की तीखी नोक फुस्स कर देती है।

गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य मीठी चिकोटी के स्थान पर तीखा प्रहार करते हैं। यही कारण है कि ऊपर से समान्य हास्य रचना का भ्रम उत्पन्न करने वाली इनकी रचनाएँ अंत तक आते-आते करूण व्यंग्य में परिवर्तित हो जाती है। व्यंग्य के संबंध में वे स्वयं कहते हैं कि व्यंग्य एक पढ़े-लिखे और सभ्य इंसान की प्रतिक्रिया है, सभ्य समाज की विभिन्न असभ्यताओं के बारे में। व्यंग्य के लिए भाषा की शालीनता व्यंग्यकार का एक कारगर हथियार है।

जनतंत्र में सरकारी तंत्र के तिलिस्म को तोड़ना जायज़ ही नहीं ज़रूरी भी है। बिना किसी कटुता और लाग-लपेट के स्थितियों और पात्रों के चित्रण द्वारा गोपाल चतुर्वेदी ने इस काम को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। इनके व्यंग्य की यही विशिष्ट कुशलता है कि इन्होंने आम आदमी के साथ व्यवस्था की जड़ता और संवेदनहीनता से सामान्य कर्मचारी की त्रासदी को भी जोड़ा है। भारतीय प्रशासनिक सेवा में विभिन्न उत्तरदायित्व पूर्ण पदों पर रहते हुए भी गोपाल जी समूचे तंत्र पर लगातार अपने तीखे व्यंग्यों के माध्यम से प्रहार करते रहे हैं।

गोपाल चतुर्वेदी ने राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यंग्यों में छोटी से छोटी विसंगति को भी अपना निशाना बनाया है। सरकारी तंत्र से संबंधित कोई भी विषय घूसखोरी, लालफीताशाही, अफसरशाही, भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार, पदलोलुपता, चमचागिरी आदि इनकी लेखनी से अछूता नहीं रहा है।

राजनीतिक और प्रशासनिक व्यंग्य को पढ़ते समय पाठक के समक्ष ये व्यंग्य एकदम जीवंत वातावरण प्रस्तुत कर देते हैं। पाठक को इन व्यंग्यों को पढ़ते समय यह अहसास ही नहीं हो पाता कि वह अपने घर में बैठकर इन व्यंग्य लेखों को पढ़ रहा है अथवा किसी कार्यालय में सरकारी तंत्र के जाल में घिरा हुआ है।

प्रशासनिक एवं राजनीतिक व्यंग्यों के साथ ही गोपाल चतुर्वेदी के सामाजिक व्यंग्य भी सच्चाई की एक-एक परत उधेड़ने में कमतर नहीं है। जहाँ इन्होंने सरकारी तंत्र की पोल खोली है वहीं समाज के कोने-कोने में झाँककर अपनी पैनी दृष्टि से विसंगतियों को ढूंढ़ा और उसे जनता के सामने रखा। इनके सामाजिक व्यंग्यों में आम जीवन की छोटी-बड़ी सभी समस्याएँ देखने को मिलती हैं। अपने सामाजिक व्यंग्यों के अंतर्गत समकालीन शिक्षा व्यवस्था, कानून व्यवस्था, धार्मिक कर्मकाण्ड एवं आडंबर, स्वास्थ्य संबंधी, साहित्य संबंधी, आर्थिक व्यवस्था, संबंधों के विघटन आदि सभी सामाजिक स्थितियों-परिस्थितियों पर व्यंग्य करते हुए गोपाल चतुर्वेदी ने उसकी परत-दर-परत उधेड़ने का कार्य किया है।

गोपाल चतुर्वेदी कथात्मक शैली के माध्यम से अपनी बात को कहते है। इनकी व्यंग्य रचनाएँ व्यंग्यात्मक टिप्पणियों का लेखा-जोखा नहीं हैं अपितु वर्तमान में व्याप्त विसंगतियों पर विभिन्न चरित्रों तथा कथ्यात्मक घटनाओं के माध्यम से प्रहार है। गोपाल जी ने अपने व्यंग्य को रोचक बनाने के लिए पत्रात्मक, कथात्मक, फंतासी, अन्योक्ति, वर्णनात्मक, विवरणात्मक, मिथकीय, संवाद, साक्षात्कार, प्रश्नोत्तर आदि विभिन्न शैलियों का सहारा लिया है। विषयानुसार शैली के चुनाव और उसमें फंतासी संवाद और भाषाई रंगत का तालमेल इनकी अपनी विशेषता है। इनकी भाषा की बनावट एवं बुनावट अपने वैशिष्ट्य के कारण व्यंग्य को नई ताजगी देकर उसे प्राणवान बनाती है। गोपाल चतुर्वेदी ने अपनी रचनाओं, अपने व्यंग्यों में समस्याओं को तो रखा है लेकिन उसका समाधान कहीं पर भी प्रस्तुत नहीं किया है। इसके लिए वे स्वयं कहते हैं कि लेखक का कार्य अपनी लेखनी के माध्यम से जनता को

समस्याओं से रुबरु कराना है। इन समस्याओं के समाधान के लिए जनता को स्वयं आगे आना होगा क्योंकि समस्याओं का समाधान लेखनी से नहीं बल्कि आंदोलनों से संभव है।

यह कहा जा सकता है कि राजनीति, शासन, समाजसेवा, संस्कृति, शिक्षा-व्यवस्था, कानून व्यवस्था आदि क्षेत्रों में मनुष्य की संवेदनहीनता को रेखांकित करना, उस पर चिकोटी काटना, उस पर बौद्धिक एवं तार्किक प्रहार करना गोपाल जी का अभिष्ट रहा है। उन्हें पढ़ना आज के समाज, मनुष्य राजनीति आदि से सीधे जुड़कर सबकी भीतरी परतों में झाँककर उसमें निहित विसंगतियों से दो चार होना सचमुच में एक मनोरम अनुभव है। उन्हें पढ़कर सचमुच एक ऐसे रचनाकार को पढ़ने का सुख मिलता है जो हालात की शर्मनाक बेचारगी को बख्शता नहीं बल्कि अपने व्यंग्य प्रहारों से कहीं न हीं बदलाव का तिलिस्म पैदा करने की कोशिश करता है। गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्यों को पढ़ना अपने समय के मिथ्याचार और कदाचार से दो-चार होना है। यही उनकी रचनाशीलता की पुरजोर पहचान है। वे आधुनिक समय के प्रतिष्ठित व्यंग्यकार, हिंदी व्यंग्य विधा के सशक्त हस्ताक्षर ही नहीं बल्कि आधुनिक हिंदी व्यंग्य के सुमेरू भी हैं।